



SHRI KAPIL DEV PRASAD

Shri Kapil Dev Prasad is a traditional handloom weaver who is known for keeping the 'Bavan Buti' weaving art alive and its expansion. It is made with different colour threads on the cloth woven on handloom.

2. Born on 5th August, 1955, Shri Prasad could receive his education up to middle class. He could not enroll in high school due to financial constraints. From the age of 15, he has been continuously working on weaving cloth with Bawan Buti art on handloom, his family profession. Thousands of weavers have been trained in this art by him. Sarees, bed sheets, curtains, table cloths, shawls, dupattas, etc. made by the weavers of Bihar Sharif are liked in India and abroad.

3. Shri Prasad formed a Primary Weavers Cooperative society in 1980 by organizing the weavers in his village Bavan Vigha. He has been contributing in providing employment and other government assistance to the weavers through the cooperative society. Due to his efforts, Government of India, Ministry of Textiles, New Delhi, under the National Handloom Development Program (NHDP) is running a block level cluster in Bihar Sharif, which is benefiting thousands of weaving families.

4. Shri Prasad has been associated with many handicraft weavers' organizations. In 1982, he was elected as a member of the Board of Directors of the Bihar Sharif Regional Handicraft Weavers Cooperative Union Limited, Bihar Sharif. He was also elected member of the Board of Directors of Bihar State Handloom Weavers Co-operative Union Limited, Rajendra Nagar, Patna. In 1990, he was able to export Bavanbuti and Upendra Maharathi Design's Bed Sheet, Table Cloth, Curtain and Baby Caring Cloth to Germany and Australia by joining Bihar State Export Corporation Limited Patna. In 1992, he got constructed a common work shed for weavers by Nirmat Nigam in Bavan Vigha, in which weavers are still doing weaving work.

5. Shri Prasad is the recipient of numerous awards and honours. He has been awarded the "National Award" by the Weavers' Cooperative Society in 1993-94 by the Government of India, Ministry of Textiles, New Delhi; "Weaver's Award" by the Government of Bihar, Directorate of Handicrafts & Silks, Bihar Patna in 2001-02, "Akshat Naman Patra" by Takshik Educational Society, Delhi in 2004-05, "Samman Patra" by District Magistrate Nalanda and "National Merit Certificate" by Government of India Ministry of Textiles, New Delhi. He has also been honoured by the Upendra Maharathi Craft Research Institute, Patna and the famous Raymond Company, Mumbai in the textile sector.



श्री कपिल देव प्रसाद

श्री कपिल देव प्रसाद एक पारंपरिक हथकरघा बुनकर हैं, जो 'बावन बूटी' बुनाई कला को जीवित रखने और आगे बढ़ाने के लिए जाने जाते हैं। इसे हथकरघे पर बुने गए कपड़े पर अलग-अलग रंग के धागों से बनाया जाता है।

2. 5 अगस्त, 1955 को जन्मे, श्री प्रसाद ने माध्यमिक कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की। आर्थिक तंगी के कारण वह हाई स्कूल में दाखिला नहीं ले सके। 15 वर्ष की आयु से ही वह अपने पारिवारिक पेशे हथकरघे पर बावन बूटी कला द्वारा कपड़ा बुनने का काम कर रहे हैं। उन्होंने हजारों बुनकरों को इस कला में प्रशिक्षित किया है। बिहार शरीफ के बुनकरों द्वारा बनाई गई साड़ी, चादरें, पर्दे, टेबल क्लॉथ, शॉल, दुपट्टे आदि देश-विदेश में पसंद किए जाते हैं।

3. श्री प्रसाद ने 1980 में अपने गांव बावन बीघा में बुनकरों को संगठित कर प्राथमिक बुनकर सहकारी समिति गठित की। वह सहकारी समिति के जरिये बुनकरों को रोजगार और दूसरी सरकारी सहायता उपलब्ध कराने में अपना योगदान देते रहे हैं। उनके प्रयासों से भारत सरकार का वस्त्र मंत्रालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) के तहत बिहार शरीफ में ब्लॉक स्तर पर क्लस्टर चला रहा है, जिससे हजारों बुनकर परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।

4. श्री प्रसाद कई हस्तशिल्प बुनकर संगठनों से जुड़े रहे हैं। 1982 में, उन्हें बिहार शरीफ क्षेत्रीय हस्तशिल्प बुनकर सहकारी संघ लिमिटेड, बिहार शरीफ के निदेशक मंडल का सदस्य चुना गया। वे बिहार राज्य हथकरघा बुनकर सहकारी संघ लिमिटेड, राजेंद्र नगर, पटना के निदेशक मंडल के सदस्य भी चुने गए। 1990 में, वह बिहार स्टेट एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड पटना से जुड़कर बावन बूटी और उपेंद्र महारथी डिजाइन की बेडशीट, टेबल क्लॉथ, पर्दे और बेबी केयरिंग क्लॉथ जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया को निर्यात करने में कामयाब हुए। 1992 में उन्होंने बावन बीघा में निर्मित निगम के जरिये बुनकरों के लिए कॉमन वर्क शेड बनवाया, जिसमें अब भी बुनकर बुनाई का काम करते हैं।

5. श्री प्रसाद को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें 1993-94 में भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय, नई दिल्ली की बुनकर सहकारी समिति का "राष्ट्रीय पुरस्कार", 2001-02 में बिहार सरकार, हस्तशिल्प और रेशम निदेशालय, पटना द्वारा "बुनकर पुरस्कार", 2004-05 में तक्षिक एजुकेशनल सोसाइटी, दिल्ली द्वारा "अक्षत नमन पत्र", जिला मजिस्ट्रेट नालंदा द्वारा "सम्मान पत्र" और भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा "राष्ट्रीय योग्यता प्रमाण पत्र" से सम्मानित किया गया है। उन्हें टेक्सटाइल के क्षेत्र में उपेंद्र महारथी क्राफ्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट, पटना और प्रसिद्ध रेमंड कंपनी, मुंबई द्वारा भी सम्मानित किया गया है।